शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समकालीनता के सन्दर्भ में 'प्रवाद पर्व' का मूल्यांकन

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
शासकीय महाविद्यालय
जैतवारा, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त श्री नरेश मेहता भारतीय संस्कृति के सच्चे पोषक थे। यद्यपि प्रारंभ में उनका झुकाव वामपंथ की ओर था, परन्तु जब उन्होंने देखा कि वामपंथ में भारतीय चिंतन, भारतीय सर्जनात्मकता के लिए स्थान नहीं है, तब वे निर्मम भाव से उससे अलग हो गए। उनका विश्वास है कि एक सर्जक के लिए चिंतन की और आस्था की कोई सीमा नहीं होना चाहिए। उनकी दृष्टि में लेखक, कवि सीमा पर खड़े होकर 'असीम' को अभिव्यक्त करने के लिए ही बना होता है। श्री नरेश मेहता के काव्य में सर्वत्र यही दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'प्रवाद पर्व' को समकालीनता के सन्दर्भ में देखा गया है।

'प्रवाद पर्व' का मूल्यांकन

रामचरित मानस की छोटी-सी घटना को श्री नरेश जी ने 'प्रवाद पर्व' की संज्ञा दी है। यह निश्चित रूप से कई मायने में युगबोध की कसौटी है। पौराणिक कथानक को आधुनिक भाव-बोध के साथ प्रस्तुत करने में नरेश मेहता सिद्धहस्त थे। राम और रावण दोनो की एक राशि थी और एक युग के थे। एक ओर अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता और दूसरी ओर सिर्फ सुनिए और आज्ञा का पालन कीजिए। जिसने भी अपना तर्क या अपनी बात रखी, सुझाव दिया, उसका निष्कासन निश्चित था। रावण इसी का उदाहरण था। उचित सलाह देने पर रावण ने अपने भाई विभीषण को बाहर का रास्ता दिखा दिया। वहां आम जन की क्या बिसात। दूसरी ओर श्रीराम की धर्मपत्नी सीता साक्षात् सत्य और शक्ति की प्रतिमा थी, उस पर एक साधारण धोबी ने ऊंगली उठा दी, जो कई मायने में अपराध हो सकता था, किन्तु राम स्वयं उस अकेली निहत्थी आवाज के रक्षक बन गये। उन्होने स्वंय कहा : .

"गूंगेपन से कहीं श्रेयस है
वाचालता/जिस दिन
मनुष्य अभिव्यक्ति हीन हो जायेगा
वह सबसे अधिक / दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा।
कैसा ही इतिहास पुरुष क्यों न हो लक्ष्मण।
सामाजिक भाषाहीनता
अभिव्यक्ति की इतिहास हीनता का सामना
नहीं कर सकता
लक्ष्मण ! नहीं कर सकता ।।"1

यदि अनाम जन को अपने राज्य या राजा से थोड़ा भी भय होता तो वह कभी सीता के प्रति ऐसी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता। वह अनाम जन राज्य और राजा दोनों से ही भली प्रकार से परिचित था। इसीलिए ऊंगली उठाते समय उसकी ऊंगली नहीं कँपकपाई। राम ने भी एक राजा होने के नाते उसकी अभिव्यक्ति की रक्षा की।

राम और रावण के राज्य में यही अन्तर है। एक का आधिपत्य उसके शरीर की समाप्ति के साथ ही (रावण का) समाप्त हो गया और दूसरे अर्थात् राम का युग समाप्ति के बाद आज तक

चल रहा है। सृष्टि रहने तक लोग किसी न किसी रुप में राम के मूल्यों और क्रियाओं को अपनाते रहेंगें।

'प्रवाद-पर्व' लिखते समय कवि की क्या मानसिकता थी ? या उससे जिन बिन्दुओं को युग परीक्षण के लिए चित्रित किया गया है, निम्नलिखित हैं :

1 लोकतंत्र बनाम प्रवाद पर्व

लोकतन्त्र जनता का, जनता के लिए जनता द्वारा है। 'प्रवाद-पर्व' में जन अभिव्यक्ति की रक्षा का चित्रांकन है। हर व्यक्ति को अपने भाव व्यक्त करने का पूर्ण अधिकार है। सन् 1975-76 में देश में आपातकाल की स्थिति थी। शासन जन-भावनाओं को कुचलने में लगा था। ऐसी स्थिति और ऐसे समय पर नरेश जी का 'प्रवाद-पर्व' का लिखना और भी प्रासंगिक बन पड़ता है। राम भय और आतंक के प्रतीक न बनकर राष्ट्र के प्रतीक बनकर जन-भावनाओं की रक्षा करते हैं। स्वयं कवि भी यही चाहते हैं कि राज्य नियामकों को जन भावानाओं की रक्षा करनी चाहिए।

2 नारी अस्मिता बनाम सीता

सीता के चरित्र पर जब-जब ऊंगली उठी तब-तब उसके व्यक्तित्व में और निखार आया। सभी जानते हैं कि सीता निर्दोष है। स्वयं राम को भी उनके चरित्र पर कोई शक नहीं, लेकिन अनाम जन के अभिमत की रक्षा के लिए सीता को अपने से दूर कर देते हैं। इस पर स्वयं सीता, राम का सहयोग करती है और यही सहयोग, त्याग समर्पण सारे जन के लिए अमोघ शब्द 'सीता राम' बन जाता है। सीता स्वंय कहती हैं कि सार्वजनिकता की रक्षा के लिए वैयक्तिकता अर्थात् मेरा त्याग कर देना चाहिये। सीता का यह कथन अपने में कितना तत्वस्पर्शी एवं मार्मिक है-

"एक अनाम साधारण जन ने
मेरी चरित्र-मर्यादा की ओर
तर्जनी उठायी है
और आपकी राज्य-गरिमा
किस आसक्ति के कारण व्याकुल
और क्यों-
राज्य, न्याय और राष्ट्र
व्यक्तियों तथा
सम्बन्धों से ऊपर होने ही चाहिए।
यदि
यह उस
अनाम साधारण जन का विश्वास है।
जिसे उसने निर्भय अभिव्यक्त किया है
तो राज्य, न्याय और आपको
उस अनाम प्रजा के विश्वास की
अभिव्यक्ति की
रक्षा करनी चाहिए।।"2

पति के संकट में उसका ऐसा धैर्य व कर्तव्य बोध को जाग्रत करना त्याग की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है ? प्रश्न उठता है कि क्या नारियाँ ही जीवन भर त्याग करती रहेंगी, क्या उनके जागरण और उनके पक्ष की बात कोई नहीं करेगा? श्री नरेश मेहता का स्पष्ट मत है कि जीवन को अपमानित करके कभी जीवन में समादृत नहीं हो सकते। स्त्री के प्रति उनका विशेष आदर है। वे अपनी रचनाओं में भारतीय मूल्यों की रक्षा के लिए ऐसे पात्रों की सर्जना करते है, जो इन मूल्यों के संरक्षण के लिए अपना जीवन तक दे देते हैं। नारी त्याग और बलिदान की मूर्ति है। उसकी ममता, स्नेह, सच्चरित्रता और सहिष्णुता अमूल्य होती है। इसके बावजूद स्त्री को उसका वाजिब अधिकार

आज तक नहीं मिल पाया है। श्री नरेश मेहता ने अपने काव्य प्रवाद पर्व के माध्यम से लोक बनाम राजतंत्र की समस्या पर प्रश्नचिह्न लगाया है। प्रवाद पर्व अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का सुन्दर दस्तावेज है। स्त्री सदियों से संघर्ष करती आ रही है। नारी पुरुष की अर्धांगिनी, सहगामिनी है फिर भी उस पर जुल्म ढहाए जाते हैं। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री को सिर्फ भोग्या समझा जाता है। नैतिकता-अनैतिकता के सारे मापदंड स्त्री पर ही लागू होते हैं। आज भी स्त्री अनेक प्रश्नों के उत्तर तलाश रही है।

निष्कर्ष

श्री नरेश मेहता ने अपने इस काव्य के बारे में लिखा है, "यह जून 1975 में लिखी गयी और उसके तत्काल बाद आपात-स्थिति की घोषणा के कारण मुद्रित हो जाने के बाद भी प्रकाशित न हो सकी। एक समय तो यह भी लगा कि यदि 'राज्यकृपा' को इसके मुद्रण की गन्ध भी मिल गयी तो सम्भव है कि यह कभी प्रकाशित रूप में सामने ही न आए। इतिहास ने करवट ली और इसके प्रकाशित होने पर प्रकाशक एवं लेखक दोनों ही मुक्ति का अनुभव करें तो क्या आश्चर्य है! हाँ, ऐसा करने के पीछे इस रचना के वास्तविक प्रयोजन को थोड़े ही रूप में सही, उस भीषण-स्थिति का आभास दे सकने का मुझे संतोष है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 प्रवाद-पर्व - नरेश मेहता- लोक भारती इलाहाबाद

2 समिधा भाग एक - नरेश मेहता, लोक भारती इलाहाबाद

3 समिधा भाग दो - नरेश मेहता - लोक भारती इलाहाबाद

4 उत्सव पुरूष - महिमा मेहता - भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली

5 साक्षात्कार पत्रिका - साहित्य अकादमी भोपाल